



जीवना सौरभा

Shivmani Geriatric Home

अप्रैल-जून 2016
अंक - 5

Unit of Global Hospital & Research Centre

अंदर देखिए...

सब कुछ संभव है – विश्वास रखो	...1
निर्भयता	...2
सेवा समाचार	...3
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	...4
अनुपम दृश्यावली	...5
आदि शक्ति माँ जगदम्बा सरस्वती स्मृति दिवस	...9
एक मुलाकात	...9
दिव्य दर्पण	...10

सब कुछ संभव है – विश्वास रखो

जो भी हम विश्वास करते हैं वह वास्तविक हो जाता है। यह कहा गया है कि विश्वास से पर्वत भी हट जाते हैं। नकारात्मक विचार, भावनायें और सोच ही ऊँचे पर्वतों की तरह है जो कि हमारे सीमाओं से ऊपर उठने की क्षमता को निषिद्ध कर देते हैं। विश्वास एक ऐसी ऊर्जा है, जिसके द्वारा हम उन चीजों को महसूस कर पाते हैं जो इन आँखों से दिखाई नहीं देती। विश्वास से प्राप्त होने वाली सफलता स्वयं की मुक्ति से संबद्ध है।



जिन चीजों की हमें आदत हो जाती है या हम उन पर निर्भर रहना सीख जाते हैं, इन सभी से जब हम मुक्त हो जाते हैं तो जीवन में नई अवधारणायें एवं संभावनायें विकसित होने लगती हैं। जिस प्रकार जब हम कार



चलाते हैं तो क्या हम कार चलाने से पहले ये जानने की कोशिश करते हैं कि इसका इंजिन कैसे कार्य करता है? या हम लिफ्ट का प्रयोग करने से पहले उसकी मशीनी जानकारी लेते हैं? अधिकांशतः लोग इसे कैसे प्रयोग करना है इसकी मूलभूत जानकारी ही रखते हैं। क्योंकि उन्हें विश्वास होता है कि कार अपने कार्य को करने के लिए सही विधि से निर्मित की गई है एवं कुछ बटन दबाने से ही लिफ्ट ऊपर मंजिल तक पहुँचा सकती है। आधुनिक जीवनशैली में ज्यादा सोचने की प्रवृत्ति है एवं प्रत्येक परिणाम को अपने नियंत्रण एवं निर्देशन में रखना चाहते हैं इसलिए जीवन में सहजता और साधारणता का अभाव होने लग गया है।

अतः हमें एक ऐसी संरचना की आवश्यकता है जो अप्रत्याशित, अनपेक्षित, असंभावित और अकरस्मात् स्थिति के अनुरूप ढलने की क्षमता रखता हो। एक ऐसा स्थान जिसके झरोखे से नवीनीकरण एवं नवपरिवर्तन का प्रकाश अंदर प्रवेश कर सके। जब जीवन अधिक योजनाबद्ध हो तब हम इसमें ही जम जाते हैं एवं नये क्षितिज की दिशाओं में बढ़ने एवं बहने में असमर्थ हो जाते हैं। विश्वास की शक्ति हमें अहसास दिलाती है कि हमेशा किसी योजना या संरचना के बिना भी सर्वोत्कृष्ट परिणाम प्राप्त हो सकता है। केवल विश्वास ही नये स्वप्न के साकार होने का आधार है जो हमें हमारी सीमाओं से ऊपर उठने को प्रेरित करता है, क्योंकि हम स्वयं विश्वास करने लगते हैं कि हमारी सीमायें अनन्त हैं। विश्वास ही आंतरिक ऊर्जा है जो किसी भी क्षेत्र में प्रत्येक का पथ-प्रदर्शक है।

विश्वास की शक्ति ही आशावादी दृष्टिकोण को जागृत करती है। आशावादी दृष्टिकोण वाला व्यक्ति ही अपनी क्षमता का भरपूर इस्तेमाल कर सकता है। एक आशावादी कभी निराश नहीं होता, कभी हार स्वीकार नहीं करता। कहा गया है – 'हार मत मानो, अगर खतरा मोल नहीं लोगे तो कुछ नहीं पाओगे।' जिस प्रकार जब हथौड़े से चट्टान तोड़ते हैं तो पहली कुछ चोटों का उस पर कोई असर नहीं होता, लेकिन अचानक और चोट करते हैं तो वह चट्टान



टूट जाती है। तो क्या पहली की चोटें बेकार थीं? नहीं उस अंतिम चोट ने चट्टान नहीं तोड़ी बल्कि यह पहले की गई चोटों का परिणाम था। अतः हमें भी विश्वास रख बिना निराश हुए लगातार मेहनत करते रहना चाहिए।

ब्रम्हाकुमार ओम भाई
प्रोजेक्ट मैनेजर
शिवमणी होम



निर्भयता

निर्भयता जीवन के लिए एक अमूल्य गुण है, यह एक ऐसी शक्ति भी है जिससे बड़े से बड़े कार्य को सहज रीति से सम्पन्न किया जा सकता है। निर्भयता किसी भी प्रकार के बलिदान के लिए प्रेरित करता है, चाहे राष्ट्र के प्रति हो या समाज के प्रति हो। ऐसे कई प्रमाण हमारे देश के इतिहास में उपलब्ध हैं— महाराणा प्रताप, पन्ना धाय, झाँसी की रानी एवं धर्मगुरु गोविन्द सिंह व उनके छोटे-छोटे बच्चों की कुर्बानी निर्भयता एवं साहस के ज्वलंत उदाहरण हैं।



निर्भयता अर्थात् भय का अभाव। आज के आधुनिक युग में प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी प्रकार के भय से जूझ रहा है। जिस कारण वह तनाव, उदासी, दबाव, निराशा एवं कुण्ठा जैसी नकारात्मक बीमारियों का शिकार है। जो इंसान भयभीत होता है वो उतना ही हिंसक भी हो सकता है। भले और किसी का घात करे न करे लेकिन सबसे पहले भय के कारण अपना ही घात कर बैठता है। वर्तमान समय में यहाँ तक देखने-सुनने में आता है कि मेधावी छात्र जो परीक्षा में उत्तीर्ण तो हुआ लेकिन अच्छा प्रतिशत न होने के कारण मात-पिता के भय से अथवा अपनी ऊँची आकांक्षाओं के कारण आत्मघात भी कर लेता है। वास्तव में भय भी अज्ञानता का ही रूप है जो यथार्थ सत्य से अनभिज्ञ होने के कारण हीन भावना का रूप ले लेती है। भयभीत होने के कारण व्यक्ति की परखने एवं निर्णय करने की शक्ति क्षीण हो जाती है और वह स्वयं को असहाय अनुभव करने लगता है।



भय का अर्थ है मानसिक रूप से नकारात्मक भावनाओं और



नकारात्मक दृष्टिकोण से युक्त होना। इसके अंतर्गत अंतर्मन में छिपी हुई असुरक्षा की भावना व कमजोरियाँ होती हैं। जब हमारी आत्मा कमजोर हो जाती है तब ऐसी मन की स्थिति बनती है। भय के कई प्रकार होते हैं: व्यक्तिगत भय, पारिवारिक भय, सामाजिक भय, व्यवसायिक भय, मनःकायिक भय एवं मृत्यु का भय आदि।

अभी के आधुनिक युग में इस समस्या का हल साइंस के साधनों के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता, किन्तु आध्यात्मिकता के द्वारा भय का समाधान संभव है। स्वयं परमपिता परमात्मा द्वारा सिखाए गए राजयोग से हमारे अंदर की सुषुप्त शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं। आत्मिक स्मृति से परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति आती है, उचित-अनुचित को परख कर सही निर्णय करने की शक्ति विकसित होती है। इससे भय का संस्कार, जो वास्तव में देह-भान ही है, वह परिवर्तित हो निर्भयता का गुण बन जाता है। स्वयं परमपिता परमात्मा कहते हैं कि यदि सदा योगयुक्त स्थिति में रहें तो कैसी भी परिस्थिति हो सुरक्षित रहेंगे। अतः परमात्म छत्रछाया के अंदर रहें एवं निर्भय रहें।

यह बात भी याद रखनी चाहिए कि जो निर्भय बनेगा, वह किसी के साथ बैर-विरोध का व्यवहार नहीं कर पायेगा, बल्कि औरों के सहयोग के लिए आगे आयेगा। डर से मुक्त व्यक्ति स्वयं में ही संपूर्ण होता है, जो अकेले ही



डर की पूरी फौज का सामना कर सकता है। निर्भयी न तो खुद को, ना ही किसी अन्य को सताता है ना मारता है। उसके अंतर्मन में बदले की भावना उत्पन्न ही नहीं हो सकती। भय एवं बैर से मुक्त होकर प्रभु प्रेम में लीन होकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है।

निर्भयता के गुण को विकसित करने के लिए हमें चाहिए कि हम उन कार्यों को पहले करें जिनसे हमें डर लगता है क्योंकि कुछ किए

बिना मंजिल कभी प्राप्त नहीं हो सकती और मंजिल को प्राप्त करने के लिए अपनेआप पर विश्वास करना पड़ेगा एवं दूसरों में भी विश्वास जगाना पड़ेगा। इसके लिए सकारात्मक सोचने की शक्ति विकसित करनी होगी एवं राजयोग के प्रतिदिन के अभ्यास से आप स्वयं तो क्या अन्य को भी भयमुक्त बना सकते हैं।

ब्रम्हाकुमारी विजय बहन
डिप्टी मैनेजर
शिवमणी होम



सेवा-समाचार

1. शिवमणी होम के प्रोजेक्ट मैनेजर ब्रम्हाकुमार ओम भाई एवं डिप्टी मैनेजर ब्रम्हाकुमारी विजय बहन का अप्रैल मास में सेवार्थ जयपुर जाना हुआ एवं वैशाली नगर, बापूनगर, किशनपोल एवं बन्नी पार्क सेंटर के सभी भाई-बहनों से स्नेह मिलन किया। ब्रम्हाकुमार ओम भाई जी ने सर्व को शिवमणी होम के कार्यकलापों के बारे में अवगत कराया तथा अपने अनुभवों की लेन-देन करते हुए बताया कि किस तरह श्रेष्ठ संकल्प शक्ति के प्रयोग के द्वारा जमा का खाता बढ़ाया जा सकता है एवं सदा नशे व खुशी में रहने की युक्तियों पर भी प्रकाश डाला। ब्रम्हाकुमारी विजय बहन ने अपने विदेश के अनुभवों को सभी के समक्ष रखते हुए बताया कि यदि बाबा पर संपूर्ण निश्चय है तो कैसे बाबा की मदद सहज प्राप्त होती है। सर्व से चर्चा करते हुए बाबा के द्वारा बताई युक्ति को दोहराया के कैसे हम घर गृहस्थ में रहते भी मधुबन की अनुभूति कर सकते हैं। इस प्रकार सबको उमंग-उत्साह में लाते व खुशी का अनुभव कराया।

2. सीनियर सीटीजन्स को बुजुर्गों के स्वास्थ्य से संबंधित वीडियो फिल्म दिखाई गई। जिसमें यह दर्शाया गया था कि किस प्रकार परिवार में बुजुर्गों को शारिरिक बीमारी के समय मानसिक संभाल के साथ-साथ भावनात्मक समर्थन की भी आवश्यकता होती है। इस विषय पर सभी वरिष्ठ जनों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए कि किस प्रकार मानसिक समस्याओं का सामना किया जा सकता है एवं स्वयं के मन को स्थिर व शांत रखकर परिवार के सभी सदस्यों की खुद के प्रति अधिक सुरक्षा व अधिक चिंता की भावना को कम कर पारिवारिक माहौल खुशनुमा बनाया जा सकता है। सभी ने आपस में कई ऐसे महत्वपूर्ण एवं रूचिपूर्ण बिंदुओं पर

चर्चा की तथा अपने ज्ञान में वृद्धि की।

3. शिवमणी होम में रहने वाले सभी सीनियर सीटीजन्स को होने वाली समस्याओं एवं उनके निवारण के लिए प्रोजेक्ट मैनेजर ब्रम्हाकुमार ओम भाई के द्वारा समय प्रति समय काउंसलिंग की जाती है। व्यक्तिगत रूप से की जाने वाली इस



काउंसलिंग में बुजुर्ग अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को, अपनी उपलब्धियों को, ब्रम्हण जीवन में पुरुषार्थ से संबंधित बातों को व्यक्त करते हैं तथा इससे उनके मानसिक संतुष्टता का भी आंकलन कर पाना संभव हो पाता है। जिससे प्रशासन के द्वारा अन्य त्रुटियों का निवारण सहज हो जाता है।

4. डॉ. अम्बरीश माथुरीया (B.A.S.M., M.D. Alt. Med.) एवं युगल जो कि शिवमणी होम का अवलोकन करने मुंबई से पधारे जो कि अल्टरनेटिव चिकित्सा पद्धति जैसे एक्यूप्रेसर, एक्यूपंक्चर, सुजोक, रैकि एवं योगा थेरेपी के विशेषज्ञ थे। नम्र निवेदन पर सेवाधारियों के लिए योगा पर विशेष सत्र लिया जो कि अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं लाभप्रद रहा।



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस



शिवमणी होम के प्रांगण में अतिउत्साह एवं भव्यता के साथ 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के आरंभ में स म र त शिवमणी होम

के निवासियों के द्वारा दीप-प्रज्ज्वलित कर आत्म ज्योति को सदैव जागृत रखने तथा योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने का संकल्प लिया गया। तत्पश्चात् सभी बुजुर्गों के द्वारा शारिरिक स्वास्थ्य के लिए योगासन के साथ राजयोग के द्वारा किस प्रकार संपूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है, इस विषय पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई तथा रैली के द्वारा सर्व को जागृत भी किया कि अपनी दिनचर्या में योग का समावेश कर मानसिक एवं शारिरिक स्वास्थ्य प्राप्त करें। साथ ही समस्त शिवमणी होम के निवासियों ने संपूर्ण रूचि से योग कर स्वयं को आंतरिक ऊर्जा से भरपूर किया, एवं विश्व कल्याण के निमित्त एक दिवसीय अखण्ड योग-तपस्या करके शांति के प्रकम्पन भी फैलाये।

शिवमणी होम के रहवासी भ्राता लेफ्टिनेंट कर्नल खुराना ने राजयोग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राजयोग के द्वारा मन में प्रबल आत्मविश्वास जागृत होता है जिससे स्वयं की महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के दृढ़निश्चय को बल मिलता है एवं इसी विश्वास की प्रबल शक्ति से सफलता भी प्राप्त की जा सकती है। प्रत्येक मनुष्य के व्यक्तित्व में किसी विशेष कार्य या आविष्कार के बीज छिपे रहते हैं, जो कि राजयोग की साधना से ही फलीभूत होते हैं। राजयोग के द्वारा मनुष्य अपनी छिपी शक्तियों से परिचित हो जाता है जिससे उसका सोया हुआ विश्वास हृदय में दृढ़ हो जाता है और फिर वह तभी चैन लेता है जब वह अपनी सारी सोयी

महानता को जगा लेता है।



शिवमणी होम के प्रोजेक्ट मैनेजर ब्रह्माकुमार ओम भाई ने सर्व को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की बधाई देते हुए ईश्वरीय



स्नेह, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ चरित्रों के साथ सेवा में तत्पर रहने के लिए संपूर्ण स्वास्थ्य को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया तथा अपने हर कर्म और विशेषता द्वारा परमात्मा को

प्रत्यक्ष करने की प्रेरणा दी। अपने जीवन का लक्ष्य विश्व कल्याण का कार्य बताते हुए कहा कि लक्ष्य की प्राप्ति तभी संभव है जब लक्षण से संगठन को सुदृढ़ बनाने का कार्य होगा, इसके लिए अपनी जीवन शैली में परिवर्तन लाना ही विश्व परिवर्तन की प्रथम सीढ़ी है। स्वपरिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा, चाहे वह परिवर्तन आंतरिक हो या बाहरी हो, क्योंकि योगासन के द्वारा स्व अनुशासन उत्पन्न तो होता ही है साथ ही मन भी स्वस्थ होता है। योग के सूक्ष्म फायदे को स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया कि मन के स्वस्थ होने से अभिप्राय आत्म-संयम से है। स्वस्थ और शिक्षित व्यक्ति भले ही अपने जीवन में असफल हो जाये, किन्तु आत्मसंयमी व्यक्ति कभी असफल नहीं हो सकता। आत्मसंयमी व्यक्ति किसी भी प्रकार की कठिनाइयों पर हँसते-हँसते विजय प्राप्त कर लेता है। ऐसे ही व्यक्ति समाज में, देश में तथा संसार में सम्मान प्राप्त कर सकते हैं, जो औरों को उपदेश देने से पहले स्वयं उन पर अमल करते हों। बिना आत्मसंयम के कोई भी व्यक्ति न सफल हो सकता है और न ही उन्नति कर सकता है। कैसी भी समस्याएँ आयें, कितने भी प्रतिकूल अवसर हों, मार्ग कितना भी काँटों से भरा हो, केवल आत्मसंयम के सहारे से ही आगे बढ़ा जा सकता है। आत्मसंयम ही एकमात्र ऐसा गुण है जिसके आगे सभी को झुकना पड़ता है।

इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का कार्यक्रम हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ तथा सर्व में संपूर्ण स्वास्थ्य के प्रति नई चेतना विकसित हुई।



अनुपम दृश्यावली



2 अप्रैल, शिवमणी होम की बगिया महक उठी जब योगनिष्ठ, तपस्वीमूर्त, बापदादा के नयनों के नूर, अव्यक्त बापदादा के रथ आदरणीया दादी गुलजार जी का आगमन हुआ।
स्नेह का समंदर आँखों में, दया का भंडार दिल में छाया।
मुख पर सजी मधुर मुस्कान, हाथों में ममता का साया।
उमंग-उत्साह के पंख लगाए, जैसे एक फरिश्ता आया।
संगम पर वाह भाग्य हमारे, ऐसी प्यारी दादी को पाया।



ग्लोबल हॉस्पिटल के नर्सिंग स्कूल आबू रोड, के फाइनल वर्ष के विद्यार्थियों ने अपने प्रोजेक्ट के तहत शिवमणी होम का अवलोकन किया। जिसमें ब्रम्हाकुमारी हर्षा बहन ने विद्यार्थियों को शिवमणी होम की विस्तृत जानकारी दी तथा ब्रम्हाकुमारी मनीषा बहन ने 'बुजुर्गों को होने वाली बीमारियों एवं उनकी रोकथाम व उपचार' विषय पर प्रकाश डाला।

अनुपम दृश्यावली



90.4 FM रेडियो मधुबन के खास मुलाकात कार्यक्रम में शिवमणी होम के सीनियर सीटीजन्स भाई बहनों ने भी अपने जीवन के अनुभवों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। साथ ही कुछ प्रेरणादायी किस्सों से श्रोताओं का उमंग उत्साह भी बढ़ाया।



30 मई, फिल्म अभिनेत्री, निर्माता एवं निर्देशक दिव्या खोसला कुमार ने शिवमणी होम का अवलोकन किया। साथ ही यहाँ रहने वाले बुजुर्गों की देख-रेख एवं प्रशासन से संबंधित जानकारी ली।

अनुपम दृश्यावली



शिवमणी होम के प्रतिमाह मनाये जाने वाले सामूहिक जन्मदिवस में बुजुर्गों के द्वारा अतिरमणीक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई, जिसमें उन्होंने स्वरचित गीत, कविता एवं ड्रामा को बड़े ही उमंग-उत्साह से प्रस्तुत किया।



21 जून, खडत एवं आवल, आबूरोड, में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के तहत योग शिविर कराते हुए शिवमणी होम के सेवाधारी बी.के. प्रमोद, बी.के. सूरज, बी.के. जवाहर एव बी.के. सरोज भाई

अनुपम दृश्यावली



21 जून, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर इंडियन ऑइल कंपनी, पश्चिमी क्षेत्र पाइपलाइन्स, आबूरोड, के सामुदायिक भवन में छह दिवसीय योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बी.के.चंदा, बी.के. हर्षा, बी.के. मनीषा एवं बी.के. दीप्ति ने शारिरिक स्वास्थ्य के लिए विभिन्न योगासनों का अभ्यास कराया तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिए राजयोग के महत्व पर प्रकाश भी डाला।

आदि शक्ति माँ जगदम्बा सरस्वती स्मृति दिवस

शिवमणी होम के निवासियों के द्वारा 24 जून को 'मम्मा स्मृति दिवस' मनाया गया। जिसमें सर्व ने मम्मा की स्मृतियों, शिक्षाओं एवं विशेषताओं को गीत, स्वरचित कविताओं एवं संस्मरणों के द्वारा पुनः मानस पटल पर अंकित किया। मम्मा ने अपनी पालना की अमिट छाप हम ब्राम्हण वत्सों पर लगाई है, जो कदम-कदम पर हमारा मार्गदर्शन करती रहती हैं। मम्मा की कुछ अनमोल शिक्षायें इस प्रकार हैं—

- 1) परमात्मा जो दुनिया का मालिक है, दुनिया का काम कर ही लेंगे। हमें अपने आपमें ही विनाश और स्थापना का कार्य करना है। विकारों के विनाश का तथा दैवी गुणों की स्थापना का कार्य करो।
- 2) अगर पापों का बोझा सिर पर होगा तो उन्नति को पा नहीं सकेगें, इसलिए पिछले किये हुये पापों को दग्ध करो और उसकी युक्ति यही है कि श्वांसोश्वास अपने परमात्मा बाप को याद करो।
- 3) पुरानी बीती बातों को भुला दो। पुराने चोपड़े को खत्म कर नया बनाना है। अगर नये में पुराना मिक्स करते रहेगें तो न पुराना साफ होगा और न नया बन सकेगा।
- 4) दो गुण धारण करो — इज्जत और प्यार। जो ज्ञान में छोटे हैं उन्हें प्यार से उठाओ और जो बड़े हैं उनको इज्जत दो।
- 5) किसी को भी गिराने के निमित्त नहीं बनना है। हमारी कोई चाल-चलन ऐसी न हो जिसे देख कोई आगे बढ़ने के बजाय पीछे हट जाये।
- 6) बीमारी भी कर्मभोग है, इसलिए आत्म-अभिमानी और प्रभु-अभिमानी हो, साक्षी होकर चुक्तु करो। हाय-हाय नहीं करनी है। खुश और शांत रहेगें तो स्थिति भी बहुत सेवा करेगी।
- 7) ऐसे नहीं समझना है कि पुरुषार्थ तो अंत तक करना है इसलिए कमियाँ भी अंत तक रहेगीं। नहीं। श्वासों पर भरोसा नहीं। जो समझते हैं कमी धीरे-धीरे निकलेगी तो जमा भी घाटे का होगा। कमियों को जल्द खत्म करना ही पुरुषार्थ है।
- 8) पहली सर्विस यह है कि अपने को आदर्श हो कर रहना है। अब

माया से आधा कल्प की छुट्टी लेते जाओं। रावण की कोई निशानी अपने में नहीं रखो। अब राम के बनो।



एक मुलाकात



आदरणीय ब्रम्हाकुमार भ्राता जितेन्द्र गोरधन दास मोदी जी से हुई खास मुलाकात में उन्होंने अपने अनुभवों से लाभान्वित करते हुए बताया कि वे ज्ञान में 1983 से आए एवं दैवी गुणों की धारणाओं और ईश्वरीय मर्यादाओं में चलना आरंभ किया एवं 1993 से ग्लोबल हॉस्पिटल रिसर्च सेन्टर के ट्रस्टी रहे हैं। सूरत में बॉम्बे मार्केट के प्रोजेक्ट इंजीनियर रहे हैं एवं ज्ञान सरोवर के निर्माण कार्य में भी अहम् भूमिका रही है। अव्यक्त बापदादा हर मुरली में आपको सहपरिवार याद अवश्य करते थे। ज्ञान में आने से पहले वे कठोर स्वभाव वाले थे जिससे उनके साथ कार्य करने वाले कर्मचारी एवं अधिकारी उनसे बहुत डरते थे, लेकिन जबसे ज्ञान में आये तो व्यवहार में बहुत अधिक परिवर्तन आ गया। वे बहुत सरल, निर्मल एवं साधारण हो गये, जिससे सभी बहुत अचंभित भी हुये एवं परस्पर प्रेम की भावना भी बढ़ने लगी। राजयोग के अनवरत् अभ्यास से अचानक आई परिस्थितियों में भी स्थिति अचल-अडोल होने लगी, इसलिए जब कैंसर की बीमारी के अंतिम चरण में युगल ने शरीर छोड़ा, तब भी योग से सकाश देने का वायुमंडल रहा, दुख की अनुभूति नहीं हुई। ज्ञान सरोवर के निर्माण के समय का अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा कि ज्ञान सरोवर का निर्माण 25 एकड़ जमीन में किया गया जिसमें 2000 श्रमिकों और 600 कार सेवाधारियों के साथ उन्होंने कार्य किया। यह प्रोजेक्ट 10-12 करोड़ का था जिसमें हर ब्राम्हण बच्चे को आदरणीय प्रकाशमणि दादीजी ने हर रोज 1रूपये की सहयोग राशि को जमा करने को कहा। इस प्रकार सर्व ब्राम्हण बच्चों के सहयोग से यह विशाल कार्य सम्पन्न हुआ। यज्ञ में कई प्रोजेक्ट आदरणीय भ्राता जितेन्द्र के निरीक्षण में पूर्ण हुए, जैसे कि शांतिवन में टेलीफोन एक्सचेंज, वरदानी भवन, महादानी कॉटेज, अहमदाबाद में न्यू लोटस हाऊस, वेरावल में म्यूजियम, ग्लोबल हॉस्पिटल के कई प्रोजेक्ट— शिवमणी होम, नर्सिंग कॉलेज, गर्ल्स हॉस्टल एवं अन्य कई प्रोजेक्ट जो निर्माणाधीन हैं जैसे कि कार्डियक हेल्थ सेंटर, नर्सिंग हॉस्टल आदि। सर्व ब्राम्हण बच्चों के प्रति अपनी शुभ कामना व्यक्त करते हुये कहा कि अभी समय कम है, जितना हम पुरुषार्थ करना चाहे अभी ही कर सकते हैं और बापदादा की आश पूर्ण कर सकते हैं। बापदादा ने हमें विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बनाया है, अतः हमारी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। इसलिए सर्वप्रथम स्व का परिवर्तन करें तब संपूर्ण विश्व का परिवर्तन कर सकेगें।



दिव्य दर्पण

मुझे बचपन से ही भगवान को पाने की तीव्र इच्छा थी, जिसके लिए मैं बहुत भक्ति, पूजा-पाठ व व्रत आदि करती थी लेकिन तृप्ति नहीं होती थी। फिर 28 वर्ष की उम्र में 22 जून 1965 को एक ब्रम्हाकुमारी बहन द्वारा परमात्मा का सत्य परिचय मिला और प्रतिदिन मैं युगल के साथ सेंटर पर जाने लगी। 2 मास के पश्चात युगल के साथ माउंट आबू में साकार बाबा के पास मिलने पहुँचे। साकार बाबा ने पवित्रता की प्रतिज्ञा करवाई और फिर मैं बाबा की गोद में चली गई तो बाबा ने पूछा बच्ची तुम्हारे कितने बच्चे हैं? मैंने कहा बाबा मेरे 6 बच्चे हैं, मेरा पहला बच्चा शिव बाबा है और 5 लौकिक बच्चे हैं, इस तरह बाबा ने मुझे पास करा दिया। मैं हर वक्त बाबा का शुक्रिया मनाती हूँ कि बाबा ने मुझे कदम-कदम में कितनी मदद की है। उसी के आधार से मेरा पूरा जीवन चला है। मेरे जीवन में अनेक तरह की कठिनाईयाँ आईं, परन्तु एक बाबा ही मेरा रक्षक बन हर मोड़ में सहायता की, चाहे आर्थिक हो या शारीरिक हो और अंतिम वृद्धावस्था में भी मुझे ऐसी मदद की है जो मैं वर्णन नहीं कर सकती। आज मैं पाँच साल से शिवमणी होम में रहती हूँ, बाबा की पालना में पल रही हूँ। मुझे यहाँ ऐसा अनुभव होता है मानो कि मैं अपने बड़े बेटे (शिव बाबा)के पास रहती हूँ। वह मेरी इतनी अच्छी पालना करता है कि ऐसी पालना सारे संसार में ढूँढो तो नहीं मिलेगी क्योंकि यह परमात्म पालना है। सतयुग में भी हम अपने पुरुषार्थ का फल प्राप्त करेंगे लेकिन यहाँ तो स्वयं भगवान की छत्रछाया में, उनकी पालना में पल रहे हैं जो किसी युग में नहीं मिल सकती। इस समय शिव बाबा ने मेरी सारी इच्छायें पूरी कर दी हैं, अब मुझे कोई इच्छा नहीं है। हर तरह से मैं तृप्त आत्मा हूँ एवं बाबा के साथ घर जाने के लिए तैयार हूँ। बाबा की कृपा से लौकिक परिवार में भी सभी बच्चे खुशी में हैं, किसी प्रकार की चिंता नहीं है। शिवमणी होम में रहने से पहले मैं सेंटर में बहुत सेवा करती थी चाहे कर्मणा सेवा हो या वाचा सेवा, साथ ही मधुवन, ज्ञानसरोवर में सेवा करने का मुझे बहुत शौक था। लेकिन उम्र के हिसाब से अब वह सेवा नहीं कर सकती तो बाबा ने शिवमणी होम में ही बिठा दिया। यहाँ मन्सा सेवा के साथ-साथ पार्टी में आने वाले भाई-बहनों को साकार बाबा के संग के अनुभव सुनाती रहती हूँ जिससे सभी आत्मायें तृप्त होकर जाती हैं, यही मुझे खुशी है। दिल में एक ही तमन्ना रहती है कि हर आत्मा बाबा का संदेश ले लेवे एवं बाप के वर्से का अधिकारी बन जाये। यही मेरी सर्व के प्रति शुभकामनायें हैं।



सफलता हमारा परिचय दुनिया को करवाती है और असफलता हमें दुनिया का परिचय करवाती है।

SHIVMANI GERIATRIC HOME
(Project of Global Hospital & Research Centre)
Near Global Hospital Trauma Centre
Taleti, Abu Road, Dist Sirohi
Rajasthan (India) - 307 510
Phone: 9414092383; 9413372922 (Office)
9414037045; 9875050933 (Manager)
E-mail: shivmani.opk@gmail.com
Website : www.shivmani.org

Feedback

Valuable feedback and information may be emailed at
shivmanihome@gmail.com



बी.के. सावित्री केजरीवाल
रूम नं. 26
शिवमणी होम